eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

डॉ. अम्बेडकर के दर्शन की प्रासंगिकता

[1]**डा0 अभिलाष सिंह यादव**
[1]एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, महामाया राजकीय महा0 धनुपुर, हण्डिया, प्रयागराज।

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

डॉ. अम्बेडकर के दर्शन की प्रसंगिकता आज वर्तमान में अगर लेकर चले तो समाज में समानता, और भ्रातत्व की भावना जागृत होगी। ''आज भारत जिस आत्महीनता और नपुसंक किस्म की बुद्धिजीवता से गुजर रहा है उससे मुक्ति के लिए डॉ. अम्बेडकर पुरुषार्थ के प्रेरणास्रोत हो सकते हैं।
मुख्य शब्दावली– डॉ. अम्बेडकर, दर्शन, प्रासंगिकता, समानता, और भ्रातत्व की भावना, एकता, समानता और सद्भाव।

प्रस्तावना

यूं तो बाबा साहब अम्बेडकर का नाम का इस्तेमाल करके राजनीतिक स्वार्थो की सिद्धियां की जा रही है। लेकिन राष्ट्र की एकता, समानता और सद्भाव को विकसित करने तथा अंधविश्वास व रुढ़ियों के खिलाफ संघर्ष करके सामाजिक विखण्डन को हतोत्साहित करने की दिशा में उनके आदर्शो का जो सदुपयोग किया जा सकता था, वह नहीं हो रहा है।''[1]

बाबा साहब अम्बेडकर और उनकी संघर्ष शीलता, शालीनता, सहिष्णुता, पुरुषार्थ और दूरदर्शिता से हम कुछ सीख सकते हैं तभी उनकी स्मृतियों और स्मारकों की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। भारत के पिछड़ी जाति में जन्म लेना आज भी कम त्रासद नहीं है। तमाम वैचारिक बदलाव और विकास के बाद भी हमारे ग्राम्यांचल ही नहीं, शिक्षित जी जाने वाले अनेक क्षेत्र भी सामाजिक कुरुतियों, रुढ़ियों ओर अंधविश्वास से ग्रस्त है। ऐसे में उन स्थितियों की कल्पना करना कठिन नहीं जिनमें 14 अप्रैल 1891 को भीमराव अम्बेडकर का जन्म हुआ था। अब तो फिर भी अछूत कहलाने वालों के प्रति सहानुभेत रखने, उन्हें शोषण से मुक्ति दिलाने की चाह रखने वालों

की कमी नहीं है, लेकिन उस समय तो जो नजारा भीमराव की ऑखों ने देखा, उससे उनका बाल मन सवर्णो के प्रति वितृष्णा से भर उठा था। अछूतों को पशु से भी बद्तर समझा जाता था। सवर्णो के निकृष्ट काम करना उनका कर्तव्य माना जाता था और उनका पालन न करने पर उन्हें समाज की घृणा, प्रताड़ना और अपमान का शिकार होना पड़ता था। भीमराव ने जब दलितों की दुर्गति देखी तो उनके मन में प्रतिशोध की भावना प्रबल हो उठी उनके मन में विद्रोह पलता रहा, जिसका विस्फोट उनके अछुतोद्धार आंदोलन के रुप में अभिव्यक्त हुआ। वे जीवन भर ऐसे कार्यो में व्यस्त रहे जिनसे उनकी गणना ऊँचे लोगों में की जा सके और वे अन्तः सिद्ध कर सके कि व्यकित जन्म से ही नहीं, कर्म से ऊँचा बना जा सकता है।

''भारत में अनेकों जातियॉ, है, ये जातियॉ राष्ट्र विरोधी है, प्रथम ये सामाजिक जीवन में विलगॉव उत्पन्न करती है ये इस संदर्भ में भी राष्ट्र विरोधी है कि जातियों के मध्य में ईर्ष्या एवं असाहनूभति उत्पन्न करते हैं यदि हम इच्छुक है कि भारत वास्तव में एक राष्ट्र ने तो इन समस्याओं पर अवश्यमेव विजय प्राप्त करना होगा। जहॉ राष्ट्र की बात है, मातृत्व की बात है तो यह होना ही चाहिए क्योंकि बिना मातृत्व के समानता एवं स्वतंत्रता की बात पेन्ट के समान होगी।''[2]

उपरोक्त विचार महामनीषी चिन्तक एवं युगद्रष्टक तथा समता, समरसता के कट्टर पक्षधर डॉ. अम्बेडकर ने संविधान सभी (25.11.1949) में व्यक्त किया था।'' डॉ. अम्बेडकर ने केवल दलिता का मसीहा कहना, उनके व्यक्तिगत को छोटा करने के समान होगा। वस्तुतः वे एक ऐसे समृद्धशाली, सुदृढ़ भारत का निर्माण करना चाहते थे जहॉ सभी नागरिकों को चाहे वह किसी जाति वर्ग या संप्रदाय का हो, उसे समानता तथा स्वतंत्रता का अधिकार देना और जन–जन के बीच वास्तविक रुप में मातृत्व का भाव पैदा करना चाहते थे। यह था राष्ट्र एकता का अद्भूत महामंत्र जातियों के बीच बोध भीमराव जी को बचपन से ही हुआ सामाजिक दूरी का परिदृश्य वे अपनी पैनी निगाहों से देखते समझते रहे। जो आगे चलकर उनके विचार–मंथन का आधार बना।

गॉधी ने अपने देहावसान के कुछ वर्ष पूर्व कहा था ''भविष्य में डॉ. अम्बेडकर के नाम के साथ चाहे किसी भी विशेषण का प्रयोग हो, वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिनको भुलाया नहीं जा सकता।''[3] नेहरु ने कहा था ''हिन्दू धर्म में उत्पीड़न के खिलाफ डॉ. अम्बेडकर विद्रोह के प्रतीक के

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

रुप मानें जाने जायेंगे।'' गॉधी पूर्णतया आश्वस्त नही थे कि अम्बेडकर के नाम के साथ किस विशेषण का प्रयोग होगा और नेहरु ने उनकी भूमिका सुनिश्चित कर दी फिर, कौन सा तथ्य ऐसा है जो अम्बेडकर को अविस्मरणीय बना देते? इस प्रश्न का उत्तर इस संदर्भ के विश्लेषण से मिल सकता है जिससे वे जीवन पर्यन्त जुडे रहे उनकी प्रमुख भूमिका अछूतोद्धार संबंधी योगदान है।

अस्प्रश्यता की समस्या स्वतंत्रता प्राप्ती के इतने वर्षो के बाद आज भी मौजूद है आज लगभग 70–80 साल पहले इस समस्या का क्या रुप रहा होगा, इसका अन्दाजा लगाना बहुत मुश्किल नहीं है, अम्बेडकर ने बहुत नजदीक से इस समस्या को देखा था, इसका अध्ययन किया था और इसको व्यकितगत रुप से भोगा था, उन्होंने इपने जीवन का ध्येय निश्चित कर लिया अछूतोंद्धार किस लगन और निष्ठा के साथ, निस्वार्थ भाव से वे इस कार्य को 30–35 साल तक करते रहे, कहने की आवश्यकता नहीं, जो कार्य क्षेत्र उन्होंने अपने लिये चुना हो सकता है, वह बहुत विशाल न हो, यह भी हो सकता है कि वे अपने कार्यो से संक्रीर्णता को पूरी तरह न निकाल पाये हो किन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि उन्होंने एक ऐसे कार्य का बीड़ा उठाया जिसकी महत्ता किसी भी अर्थ में कम नहीं थी जिस लोकतंत्र के लिए भारत अपने को तैयार कर रहा था, उसकी नींव समानता पर ही अवस्थित हो सकती थी अम्बेडकर ने इस तथ्य को स्वीकार किया और प्रलोभनों की परवाह न करते हुए उन्होंने सुधारवादी आंदोलन जारी रखा आधुनिक भारत के इतिहास में उनकी इस कर्मठता को भूला नहीं जा सकता वे जितना भी कुछ भी उपलब्ध कर पाये वह उनकी महान देन है।

अछूत वर्ग की समस्यायें किसी न किसी रुप में आज भी मौजूद है और इस वर्ग पर किये गये अत्याचार की कहानियॉ यदा–कदा अखबारों में छपती रहती है। किन्तु इस वर्ग पर किये गये अम्बेडकर के समय की व्यथाओं का वह रुप आज आवश्य ही नहीं है। जो तब था अछूत वर्ग तथा दलित वर्ग के लोगों के कल्याण के लिए बहुत कुद किया गया है। और आज भी बराबर किया जा रहा है। अगर आज के समाज में व्याप्ता विघटनकारी शक्तियों का दमन किया जा सका और 'वोट की राजनीति' से मुक्ति पाया जा सके तो बहुत जल्दी भारतीय समाज के इस कोढ को समूल नष्ट किया जा सकेगा जो कुछ भी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के वर्षो में किया गया है वह पर्याप्त न होते

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

हुए भी अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस उपलब्धि के पीछे अम्बेडकर का बहुत बड़ा हाथ था। लगभग सन 1923 से लेकर अपनी मृत्यु तक अम्बेडकर ने जिस कर्मठ कर्तव्यपरायणता से अछूतोद्वार की समस्याओं को उजागर किया और यदा–कदा क्रांति के माध्यम से अपनी मांगों को मनवाया वह अपने आप में एक मिसाल है किसी को भी यह कहने में संदेह नहीं होना चाहिए कि बिना अम्बेडकर की संक्रिय भूमिका के वे उपलब्धियां संभव न होती जिनको हम इतनी सहजता से स्वीकार कर लिया करते हैं। सामाजिक एकता के क्षेत्र में, जिसके बिना प्रजातंत्र का कोई अर्थ नहीं, अम्बेडकर का स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा उनके कार्य करने की पद्धति पर प्रश्नचिन्ह लग सकता है, किन्तु उनके द्वारा प्रतिपादित कार्य की महानता से कोई इन्कार नहीं कर सकता।

डॉ. अम्बेडकर के द्वारा नारियों के लिए अधिकार दिलाने का कार्य आज वर्तमान में कम प्रासंगिक नहीं, डॉ. अम्बेडकर स्त्रियों के लिए हिन्दू कोण बिल अधिनियम संसद में पास कराके स्त्रियों को पुरुषों के समान समानता का अधिकार प्रदान कराया, जिसे स्त्री पुरुष में लिंग भेद की असामानता को दूर भगाया एवं इन्हें पुरुषों के समान दर्जा संविधान में प्रदान कराया था। वर्तमान में नारी आज स्त्री पुरुष से बराबरी का दर्जा निभा रही है और महिलाओं ने महान प्रगति की है। यह अम्बेडकर के ही विचार की उपज थी जो आज नारी पुरुष के कंधा–से कंधा मिलकर चल रही है।

डॉ. अम्बेडकर गॉवों को लेकर कभी रोमांचित नहीं रहे। गॉधी की आर्थिक विचारधारा के प्रति भी उनका कोई खॉस रुझान नहीं था। इसके बजाय वह नेहरु की तरह सार्वजनितक क्षेत्रों की मार्फतत्वरित औद्योगिकीरिण के हामी थे। नेहरु की तरह वे सोवियत संघ की आर्थिक और तकनीकि उपलब्धियों के प्रशंसक थे हालांकि उन्हें साम्यवादी राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था पसंद नहीं थी। सोवियत संघ की सराहना के इस भाव ने उन्हें नेहरु की तरह ही खेती में सहकारिता और कृषि को एकीकृत बनाने का हामी बनाया। डॉ. अम्बेडकर का उदारीकरण के प्रति क्या रुख रहता तथा कैसी प्रतिक्रिया होती? वह पोगापंथी नहीं थे लिहाजा वे निश्चित तौर पर आने आर्थिक चिंतन में बदलती परिस्थितियों और नई चुनौतियों के हिसाब से बदलाव लाते डॉ. अम्बेडकर की विचार धारा लगातार विकसित होती रही। उनके विचार कभी जड़ नहीं रहे। अपने आखिरी समय में उन्होंने बुद्ध और कार्ल मार्क्स पर बड़ा सुंदर लेख लिखा था। इसमें धन के वैध और न्यायोचित

संग्रह के बारे में बुद्ध के विचार थे। डॉ. अम्बेडकर ने बुद्ध की शिक्षाओं ने निजी हाथों में सम्पत्ति जुटाने के बारे में सराहनीय बातें पायी थी। पूर्ण स्थित एक अमेरिकी भारत विद्धान और सामाजिक कार्यकर्ता गेल ओमबैट ने हाल में लिखा हे कि डॉ. अम्बेडकर खुद को पूर्व और पश्चिम की परंपराओं का वारिस समझते थे। यदि वे होते तो वैश्वीकरण का स्वागत करते और इससे नकारात्मक पक्षों की मुखालिफत भी करते ओम बैट के अनुसार उनके बाद के लेखकों में व्यक्तित्व और राष्ट्रीय संपत्ति में वृद्धि में बाजार की भूमिका के प्रति सराहना का भाव है। वह उस आधुनिक प्रौद्योगिकी और विज्ञान का भी स्वागत करते। जिसकी वजह से मानव क्षमताओं का विकास संभव हो सका है।''[4]

डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर वर्ग विहीन समाज के समर्थक थे वे ऐसे समाज के समर्थक थे जिसमें धर्म आडे न आये आज से बहुत साल पहले जबकि गांधी जी ने भी अछूतोद्धार के लिए कोई सकारात्मक आंदोलन शुरु नहीं किये थे, अम्बेडकर जी ने इसका प्रयास किया डॉ. अम्बेडकर संविधान निर्माताओं में से एक है। यह प्रजातांत्रिक समाजवादी आज तक भारत में चल रहा है। वे आरक्षण के विरुद्ध थे उनका कहना था कि अगर आरक्षण कर दिया जायेगा तो मानसिकता हमेशा दलित जै।सी ही रहेंगी जातिवाद को अम्बेडकर जी, गॉधी जी ने समाप्त किया।'' [5]

कुछ शक्तियॉ डॉ. अम्बेडकर को हिन्दू राज्य के पक्षधर बताते हैं यह उस व्यक्ति के बारे में कह रहे हैं जो कि अंदर से धर्मनिरपेक्ष थे। अम्बेडकर ने लिखा है कि ''अगर हिन्दू राज्य एक सच्चाई बन गई तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे देश के लिए सबसे बड़ा दुर्भाग्य होगा''[6]। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हिन्दू क्या कहते हैं हिन्दुत्व हमारी स्वतंत्रता, समानता और आपसी भाईचारे के लिए बहुत बड़ा खतरा है। ''भारत में धर्म परिवर्तन तो संभव है, जाति से छुटकारा नहीं है, न ही उससे जुड़ी राजनीति से।''[7]

बाबा साहब अम्बेडकर का मकसद सामाजिक इंजीनियरिंग था पूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने उसे पुनः राजनीतिक इंजीनियर तक सीमित कर दिया। बाबा साहब अमबेडकर का उद्देश्य था कि गरीब या दबे कुचले लोगों को समानता में लाने के लिए कुछ वर्षो तक आरक्षण दिया जाये मगर आज की राजनीति इसमें राजनीतिक इंजीनियर का माध्यम बनाकर चल रही है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

अम्बेडकर ने कहॉ है कि धर्म मनुष्य के लिए है, न कि मनुष्य धर्म के लिए। उन्होंने बुद्ध और उनके धर्म की भवितव्यता शीर्षक से लेख में बताया कि जीवन में धर्म की आवश्यकता और उपयोगिता क्या हे वे बौद्धधर्म से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने बौद्ध धर्म कों अंगीकार भी कर लिया था क्योंकि इस धर्म में उन्हें इन्सानियत और अपनेपन के आचरण दिखाई दिये अन्यथा उन्होंने स्पष्ट कहा था कि जो धर्म विषमता का समर्थन करता है हम उसका विरोध करते हैं। अगर हिन्दू धर्म अस्प्रश्यता का धर्म है तो उसे समानता का धर्म बनना चाहिए। हिन्दू धर्म को चतुष्य निर्मूलन की आवश्यकता है। चातुष्यवर्ण व्यवस्था छुआछूत की जननी है। जाति भेद और अस्पृश्यता ही विषमता के रुप हैं। यदि इन्हें जड़ से नष्ट नहीं किया गया तो अछूत वर्ग इस धर्म को निश्चित रुप से त्याग देगा। जीवन के अंतिम कालखंड में बाबा साहब ने इसलिए बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया और उनके हजारों समर्थकों ने उनका अनुसरण किया।

संदर्भ सूची–

1. देशबंधु समाचार पत्र, प्रकाशन बिलासपुर, 14 अप्रैल 2003, पृष्ठ 11
2. नवभारत टाइम्स, प्रकाशन बिलासपुर, 14 अप्रैल 2003, पृष्ठ 4
3. जोशी एम. सी., गॉधी, नेहरु, टैगोर, अम्बेडकर, अभिव्यक्ति प्रकाशन गोविन्दपुर कॉलोनी इलाहाबाद (उ.प्र.), 2002 पृ 138
4. दैनिक भास्कर, प्रकाशन बिलासपुर, 14 अप्रैल, 2003, पृष्ठ 6
5. अमृत संदेश, प्रकाशन बिलासपुर, 14 अप्रैल, 2003, पृष्ठ
6. द हिन्दुस्तान टाइम्स, प्रकाशन दिल्ली, 16 अप्रैल, 2003, पृष्ठ 31
7. इंडिया टूडे, प्रकाशन दिल्ली, 9 अक्टूबर, 2002, पृष्ठ 31